<u>विहास मंगला</u>

वर्ष 2019-20 के मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी भाषा पठ्य क्रम के तृतीय

सेमिस्टर बी. बी. ए. पर आधारित अध्ययन सामग्री

COMPULSORY FOUNDATION LANGUAGE (CBCS)

HINDI : Group-III – III Semester-BBA

संपादक

डॉ. एस.ए.मंजुनाथ
हिन्दी विभागाध्यक्ष
पोंपै कॉलेज, ऐकला, मंगलूरु
अध्यक्ष
मंगलूरू विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ (विहास) मंगलूरू

2021

विहास मंगला

संपादक मंडल

उपाध्यक्ष

प्रो.नागभूषण एच.बी.
हिन्दी विभागाध्यक्ष
श्री भुवनेंद्र कॉलेज, कार्कल.

सचिव **कोशाध्यक्ष**

डॉ. शालिनी एम.
एस.डी.एम व्यवहार अध्ययन
महाविद्यालय, मंगलूरु.

डॉ. परशुराम जी. मालगे
हिन्दी विभागाध्यक्ष
बेसेंट महिला कॉलेज, मंगलूरू.

मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ (विहास)
मंगलूरु

दो बातें

साथियों मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ (विहास), मंगलूरु विश्वविद्यालय से संबद्ध कॉलेजों के अध्यापक एवं छात्रों को ध्यान में रखते हुए, कुछ वर्षों से निरंतर कई साहित्यिक गतिविधियों का कार्यक्रम आयोजन करता आ रहा है। इनमें हमारे हिन्दी भाषा के छात्र और अध्यापकों के मार्गदर्शन के लिए हिन्दी पाठ्य विषय से संबंधित अध्ययन सामग्री तैयार करना भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है।

प्रस्तुत पुस्तक में वर्ष 2019-20 के मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी भाषा पाठ्यक्रम पर आधारित विशेष अध्ययन सामग्री का संकलन किया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित द्वितीय सेमिस्टर (III Semester) के बी.ए.,बी.काम बी.एस-सी.,बी.बी.ए.तथा बी.सी.ए.,के पाठ्यक्रम के अनुसार मध्यकालीन और आधुनिक कविता, लंबी कविता, उपन्यास, नाटक, एकांकी एवं निबंधों का सार इस संकलन में प्रस्तुत है। हिन्दी भाषा के छात्र अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने के लिए सरल, प्रवाहमय एवं शुद्ध हिन्दी का उपयोग करें, इस दिशा में उनका मार्गदर्शन हेतु विषय-विशेषज्ञों द्वारा अध्ययन सामग्री तैयार हुई है। अलग-अलग कक्षाओं के प्रत्येक प्रश्न-पत्र के अनुरूप अध्ययन सामग्री यहाँ उपलब्द है। इस संकलन के लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं, इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

मंगलूरु विश्वविद्यालय हिन्दी अध्यापक संघ **(विहास)** की तरफ से इस प्रकार का मेरे संपादन में चतुर्थ प्रयास है। इस कार्य में साथी अध्यापक मित्रों का भरपूर योगदान है, अतः मैं उनके प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आशा है कि आप इसको सहर्ष स्वीकार करेंगे। इस संकलन में भूल-चूक होगी अतः आपसे निवेदन है कि कृपया इनका संशोधन करके अपने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन करने का कष्ट करें।

डॉ.एस.ए.मंजुनाथ

संपादक

चतुर्थ अध्याय : व्यवहार मंगला (बी.बी.ए.)

1. सपनों की होम डिलवरी – ममता कालिया – भैरवी पंड्या
2. दीपदान – भगवतीचरण वर्मा – आनंद रायमाने
3. रीढ़ की हड्डी – जगदीशचंद्र माथुर- चंद्रिका आर.राव
4. बहूँ की विदा – विनोद रस्तोगी- सुमना
5. सबसे बड़ा आदमी – भगवतीचरण वर्मा – पुरोबी वी.भंडारी

1. सपनों की होम डिलिवरी

-ममता कालिया

उपन्यासकार का परिचय :

ममता कालिया एक प्रमुख लेखिका हैं । हिन्दी गद्य साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपना प्रदान दिया हैं । उनके लिखें उपन्यास में – प्रेम कहानी, एक पत्नी के नोट्स, दुक्खम-सुक्खम आदि शामिल है। दुक्खम-सुक्खम के लिए आपको वर्ष २०१७ के व्यास सम्मान से सम्मानित किया गया। इसके अलावा उन्हें अभिनव भारती सम्मान, साहित्य भूषण सम्मान आदि से सम्मानित किया जा चुका है। दो खंडों में उनकी संपूर्ण कहानियाँ –'ममता कालिया की कहानियाँ' के नाम से प्रकाशित है । सपनों की होम डिलिवरी ममता कालिया जी का लघु उपन्यास है । यह उपन्यास एक सच्ची घटना से प्रेरित है । ममता जी उपन्यास के प्रारंभ में ही बताती है कि नाइजैला लॉसन और उसके पति साची की तस्वीर मीडिया के विविध माध्यम द्वारा चर्चित हो गई थी।इस घटना को टीवी में देखने के बाद उन्हें अपने उपन्यास की पृष्ठभूमि मिल गई । विदेशी पाककला विशेषज्ञ नाइजैला लॉसन के पति साची ने उसकी गरदन एक रेस्टोरेन्ट में पकड ली थी जिसे मीडिया ने कैमरे में पकड लिया था और काफी वायरल हो गई थी । नए ज़माने के करवट बदलते रिश्तों को केन्द्र में रखकर यह उपन्यास लिखा गया है । ममता जी ने यहाँ एक ऐसे प्रेम का वर्णन किया है जो व्होट्स एप के संदेशे से आरंभ होता है और विभिन्न परिस्थितियों के साथ विकसित होता है । भारतीय नारी की विभिन्न समस्याओं को यहाँ उजागर किया गया है । आज के महानगरीय जीवन की विविध समस्याएँ - आवासीय समस्या, शोहरत, शोमैनशिप और प्रसिद्धि मिलने के बावजूद रूचि का मन किसी का इंतज़ार कर रहा था ।भारतीय समाज में स्त्री की सहनशीलता को उसकी अस्मिता से जुडा गया है । जब सहनशीलता का उपहास उडाया जाता है तो वह उसके विरुद्ध कदम उठाकर आगे बढ़ना चाहती

है। इक्कीसवीं सदी के दूसरे शतक तक आते-आते शिक्षा और रोज़गार ने युवा वर्ग के सामने उम्मीदों जगाई है। पारंपरिक विवाह में बदलाव आ गया। विवाह जो जन्मोंजनम का बंधन माना जाता था वह एक जन्म तक निभाना कठिन हो गया।

रूचि शर्मा मध्यवयस्क ४० साल की प्रसिद्ध पाककला शास्त्री है। उसने मीडिया के विविध क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है। रूचि के पाककला के टीवी शॉ दो चेनलों में चलते हैं। उसकी पाककला की विधि कईं अखबारों की सफलता का कारण है। उपन्यास के आरंभ में यह बताया गया है कि रूचि अपने भूतकाल को भूलकर आगे बढ़ गई है। उसने अपने अस्तित्व को टिकाने के लिए अपने पाककला के शौक को अपने कैरियर में बदल दिया। उसकी पाककला की विविध पुस्तकें अन्य भाषाओं में अनुदीत हुई हैं। वह अपने बोलने के ढ़ंग से और मोहक स्मित से दर्शकों को आकर्षित कर देती। अपने व्यंजन के प्रस्तुतीकरण के पूर्व उसके सहायक व्यंजन बनाने की सभी सामग्री को अंदाज़ से गैस के पास रख देते। रसोईघर को अत्याधुनिक रूप से पेश करने का प्रयत्न किया जाता।

रूचि का पहला विवाह उसकी असहमति के बावजूद भी दादा-दादी ने उनकी मृत्यु से पहले जब वह एम.ए कर रही थी तब प्रभाकर शर्मा से कर दिया। प्रभाकर शर्मा चरित्र और स्वभाव का अच्छा व्यक्ति नहीं था। उसकी पढ़ाई अधूरी रह गई। प्रभाकर के मन में स्त्री यानि एक समर्पित, सहनशील और अनुगामिनी। उसकी सारी बाते यौन संबंध से ताल्लुक रखती। रूचि ऐसे गंदे रवैये के लिए उसे टोकती रहती। उन दोनों का एक बेटा था – गगन। रूचि प्रभाकर की गंदी बातों का आक्रोश प्रतिहिंसा के रूप में अपने बेटे गगन पर उतारती। वह सोचती थी कि गंदे इन्सान का बच्चा भी गंदा ही होगा। वह अपने वैवाहिक जीवन को दलदल समझती। गगन जब चार साल का था तब प्रभाकरअपने बेटे को गिलास में दो-चार बूँदे दारू की डालकर देता और दोनों जाम टकराते। रूचि ऐसी हरकतों से तंग आ गई थी। वह सोचती थी कि बेटे के अंदर जो भी गंदी हरकतें आई थी उसके लिए उसका पति ही ज़िम्मेदार था।

समय ऐसे बितता गया, गगन जब नौ साल का था तब उसके टिफिन-बॉक्स से जली हुई सिगरेट के दो ठूँठे मिलें। रूचि ने जब इसके बारे में पूछना चाहा और अनुशासन की बात की तो प्रभाकर उससे उल्टा ही काम गगन से करवाता। प्रभाकर आए दिन आसपास की औरतों के साथ गलत व्यवहार करता, जिसके भाजन के रूप में रूचि को शर्मिंदा होना पडता। आखिरी पति से तंग आकर रूचि ने पति से अलग होने का निर्णय लिया। वह जब गगन की परवरिश के बारे में सोचती तो उसे लगता था कि वह उसकी ज़िम्मेदारी है। गगन आए दिन स्कूल के लिए दैरी से उठता और बस चली जाती। रूचि बाद में स्कूल तक छोड कर आती। एक दिन गगन को स्कूल तक छोडकर घर आई तो उसकी कामवाली सरिता बाई गुस्से में बाहर खडी दिखाई दी। रूचि ने जब उसका कारण पूछा तो उसने बताया कि प्रभाकर ने उसके साथ बलजबरीपूर्वक गलत व्यवहार करना चाहा। अब वह इस घर में काम नहीं करना चाहती। रूचि झूठे और लंपट प्रभाकर से तंग आ गई थी। इतना सब कुछ होने बावजूद भी जैसे कुछ हुआ ही नहीं ऐसे सोने का नाटक कर रहा था। वह अपने माँ-बाप के घर वापस जाना चाहती थी, परंतु उसे उसकी माँ की नसिहत मालूम थी कि वह उसे पति का घर नहीं छोडने देगी। रूचि ने पति का घर छोडकर बाहर से माँ को फोन किया तो माँ ने बताया कि अभी चाहो तो तुम आ सकती हो परंतु तुम पति-पत्नी का गुस्सा शांत हो जाए तो वापस चली जाना। रूचि के लिए न तो पति के घर में और नहीं पिता के घर में स्वागत था। वह फिर भी अपने मन को मनाकर पिता के घर जाती है। पिता उसे गगन को भी साथ रखने की बात करते हैं परंतु रूचि गगन के साथ प्रभाकर की यादों से जुडना नहीं चाहती थी।

अपने कैरियर का आरंभ तरला दलाल की सहायक के रूप में किया। पीछले नौ साल से खुद ऐंकर बनकर छोटे पर्दे पर शौहरत और क़ामयाबी की सीढियाँ चड रही है। माता-पिता की मृत्यु के बाद उसने बंबई में ओशविरा के विक्टोरिया चैम्बर्स में एक बी.एच. के. फ्लेट में रह रही

है। अब उसका प्रभाकर के साथ कानूनी तलाक़ हो गया है। गगन प्रभाकर के साथ रहता है। अब रूचि अपने पाककला के क्षेत्र में अनुभव की हांडी में तपी हुई एक्सपर्ट मानी जाने लगी।

सोमवार से शनिवार रूचि अपनी पाककला की दुनिया में व्यस्त रहती। रूचि ने ‘सुरूचि’ कार्यक्रम में ‘दलिया भरी आलू टिक्की’ की रेसिपी प्रस्तुती की। उसके प्रशंसक कईं हैं परंतु सर्वेश नारंग ने उल्टा उसकी रेसिपी के ऊपर प्रश्न उठाया कि आलू टिक्की की रेसिपी सभी लोगों के लिए सुपाच्य नहीं थी। सर्वेश को रूचि के कार्यक्रम में अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता है। जिसकी वजह से मीडिया में चैनल के टी.आर.पी. को नुकसान न हो। सर्वेश नारंग लगभग ५० साल का मध्य वयस्क ‘खुलासा’ अखबार ख़ोजी पत्रकार है। प्रथम मुलाकात में तो सिर्फ विझिटिंग कार्ड की लेन-देन हुई। रूचि और सर्वेश का मिलना-झुलना शुरू होता है। वास्तव में देखा जाए तो रूचि की रेसिपी को चुनौति देना, सर्वेश का उसकी ज़िंदगी में आने का प्रवेशपत्र था। वरना वह ज़्यादा खाने-खिलाने को इतनी अहमियत नहीं देता। एक दिन रूचि को एक कूरियर मिलता है। सर्वेश ने रूचि को सीधा अपनी वेलेंन्टाईन बनने का प्रस्ताव रखा था। रूचि उसके द्वारा बताये गये टेलिफोन नंबर पर मैसेज करती है। अब उन दोनों के बीच संदेशों की लेन-देन शुरू होती है। सर्वेश व्हॉट्स एप पर संदेश भेजता रहता। रूचि जब भी मैसेज भेजती, सर्वेश चाहे कितना भी व्यस्त हो परंतु उसके मैसेज का जवाब ज़रूर देता। वह रूचि को देखने के लिए उसके शॉ देखता। एक रविवार की सुबह रूचि की दोनों सहेलियों ने सुबह-सुबह उसके घर आ गई थी और रूचि के हाथ का नाश्ता खाना चाहती थी। रूचि ने ज़रा भी उठकर नाश्ता बनाने में दिलचश्पी नहीं बताई। उतने में सर्वेश का संदेश आता है और उसने रूचि को कैफ़े कोफी डे में बुलाया। रूचि अपनी दोनो सहेलियों को भी वहाँ आने के लिए आमंत्रित करती है। सभी वहाँ जाते हैं। थोडी देर तक रूचि अपनी सहेलियों के साथ बैठती है। जब सर्वेश आकर अलग मैज पर बैठ जाता है तब रूचि अपनी सहेलियों की पहचान सर्वेश से

करवाती है , परंतु सर्वेश उन लोगों में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं लेता। थोडी ही दैर में दोनों कुछ न कुछ बहाना बना कर निकल जाती हैं।

सुबह से शाम तक उन दोनों ने अपने जीवन की सच्चाई बयान की।सर्वेश ने बताया कि वह एक ख़ोजी पत्रकार है। उसका तीन साल पहले पहली पत्नी से तलाक़ हो गया था। उसकी पूर्व पत्नी मनजीत टेलिफ़ोन एक्सचेंज में काम करती है। सर्वेश को एक सत्रह साल का बेटा है जो अपनी माँ के साथ रहता है। सर्वेश का अकेलापन दूर करने के लिए सर्वेश की माँ बीजी अब उसके घर आ गई है। रूचि और सर्वेश दोनों के जीवन में बहार आ गई है। दोनों बारबार मिलने लगे और एक दूसरे की हाज़री पसंद करने लगे । रूचि और सर्वेश जीवन के उस मोड पर थे जहाँ उन दोनों के बीच एक समझदारी थी कि जब वे अपने कार्य में व्यस्त हो तो दूसरा उसमें कोई दिक्कत नहीं उठाता। सर्वेश ने अपनी सभी सच्चाई रूचि को बतादी थी, परंतु रूचि ने अपने बेटे गगन की बात उससे छिपाई थी। वह भविष्य में आने वाले परिणामों से अनजान थी। रूचि एक बार शादी नाम के व्यंजन से जली थी और बहुत ही बेस्वाद डीश मानती थी। इसलिए सर्वेश से दूरी बनाकर रहना चाहती थी। परंतु मन उसी ओर मुडने के लिए कहता है। इतवार आते ही दोनों सी.सी.डी. में मिलते और साथ समय बिताते। रूचि अगर जाने की बात करे तो भी सर्वेश उसे हाथ पकडकर वहीं रोक लेता। दोनों का एक ऐसा भूतकाल था जिसके बारे में सर्वेश ज़्यादा बात करना नहीं चाहता था। उसके लिए अतीत एक मरा हुआ बोझ है। वह वर्तमान में जीने वाला इन्सान है। वह सोचता है कि उसकी एक्स पत्नी मनजीत ने बेटे अंश के मन में पिता के खिलाफ़ ऐसी नफ़रत भर दी थी कि पिता को वह दानव ही मानता था। रूचि को लगता था कि सर्वेश के जीवन की कहानी, उसके ही परिवार की कहानी है, जिसमें किरदारों के नाम बदल दिए गए हैं ।

एक दिन सर्वेश रूचि को बताता है कि वे दोनों रूचि के कमरे में जाकर साथ समय बिताए। परंतु रूचि मना कर देती है और सर्वेश नाराज़ होकर वहाँ से चला जाता है। कई

दिनों तक उसका मैसेज न पाकर रूचि ख़ुद संदेश करती है और उसका हाल पूछती है। सर्वेश बहुत दुःखी था, उसके बेटे अंश की मृत्यु हो गई थी। सर्वेश ने बताया कि वह स्कूल के दिनों से ही ड्रग्स की चपेट में आ गया था। मनजीत ने जब उसकी स्कूल बदलनी चाही तो वह भूख़ हड़ताल पर बैठ गया। मनजीत के पास माँ की ज़िम्मेदारियाँ निभाने के लिए समय ही नहीं था। अंश ज्यादातर देखा जाए तो 'ममा'झ बॉय' था। सर्वेश ने अंश की तस्वीर अपनी वॉलेट में ही रखी थी। थोडे समय पहले अंश बंबई हॉटल मेनेजमेन्ट की परीक्षा देने आया था। तब बाप-बेटे अच्छी तरह से घुल-मिल गए थे।

सर्वेश रूचि के सामने बिना शादी वाला – सहजीवन जीने का प्रस्ताव रखता है।वह बिना कमिटमेन्ट वाला जीवन को जीना चाहता हैजो आज के युवा वर्ग की स्वतंत्र सोच है। रूचि इस बात का विरोध करते हुए बताती है कि सहजीवन अस्थायी, अस्थिर, एवम असंगत अनुबंध है। वह सोचती है कि मिडिया में ऐसे जीवन से उसकी 'आदर्श गृहिणी' वाली इमेज को नुकसान होगा। सर्वेश बताता है कि जब तक रूचि दिल से हाँ न कहे तब तक वह उसका इंतज़ार करेगा। एक इतवार के दिन रूचि और सर्वेश मिलते हैं। उस दिन सर्वेश की गाडी रूचि के घर की ओर मुड गई। उन दोनों के बीच के सारे बंधन टूट जाते हैं और एकदूसरे को समर्पित हो जाते हैं। सर्वेश रूचि के लिए पंद्रह अगस्त है और रूचि उसके लिए छब्बीस जनवरी है। वह चाहता है कि उन दोनों के बीच एक ऐसा रिश्ता हो जिसमें खुलापन हो। उन दोनों को अपने-अपने काम की आझादी हो। कोई एकदूसरे के काम में दखलअंदाझी न करें। रूचि जब उसका मन करे ओशविरा जाकर अपना काम कर सकती है। दोनों ने दो दोस्तों और नोटरी की उपस्थिति में विवाह की रजिस्ट्री करवाई। बीजी ने रूचि को सोने का हार पहनाकर घर में स्वागत किया। रोचि को अब उलझन हो रही थी कि उसने सर्वेश से अपने बेटे गगन वाली बात छिपाई थी। चैनल वालों ने रूचि के सामने सामिष व्यंजन दिखाने का प्रस्ताव रखा। पहले

तोउसने इस बात से मना कर दिया। बाद में यह तय हुआ कि तीन दिन रूचि अपना व्यंजन प्रस्तुत करेगी और तीन दिन कोई अन्य व्यक्ति मास-मच्छी के व्यंजन पेश करेगा।

रूचि के एक्स पति प्रभाकर शर्मा का स्वास्थ्य बिगडने लगा। अपने काम पर ध्यान न देकर अब उसे पैसों के भी लाले पडने लगे। इस तरफ रूचि एक प्रसिद्ध पाककला विशेषज्ञ बन गई। छोटे पर्दे की तारिका बन गई। लाखों में पैसे कमाती थी। वह सोचता था कि वह एक दिन रोती हुई आएगी और उसके पैरों में गुलाम की तरह गिरकर माफी माँगेगी। वह अपने जन्म दिनांक ८ नंबर को मनहूस मानता था। प्रभाकर गगन पर दबाव डालता है कि उसे पालने की ज़िम्मेदारी सिर्फ उसकी अकेले की नहीं है, माँ की भी है। गगन जब तक छोटा था तब तक पिता के कहने पर माँ को फोन कर पैसे मंगवाता था। अब वह बडा हो गया है। उसे बुरा लगता है कि प्रभाकर गगन के द्वारा पैसे रूचि से मंगवाता और उसे कुछ नहीं देता, बल्कि सभी पैसे अपनी बुरी आदतों में उडा देता। अब तक गगन उन्नीस साल का हो गया। वह देखने में लंबा और खूबसूरत है। वह बी.कॉम के प्रथम वर्ष में पढ़ाई कर रहा है। पिता ने उसे चडाया कि वह अपनी माँ से युनिवर्सिटी जाने के लिए मोटरसाइकिल माँगे। इस बात पर दोनों में बहस छिड गई। आखिर गगन ने पिता को बिना बताए घर छोड दिया। वह माँ का घर ढूँढकर ओशिवरा पहुँचा। रूचि ने पहले तो उससे मिलने से मना कर दिया पर बाद में बेटे को दस मिनिट मिलने को तैयार हो जाती है। गगन को सामने देखकर उसका मातृत्व उभर आता है। वह उसे सेब और टोस्ट बनाकर खिलाती है। दोनों में बातचीत का दौर चला। वह अपने बेटे से बता नहीं पाई कि अब उसने दूसरी शादी कर ली है। सर्वेश को गगन के बारे में कुछ मालूम नहीं है। हाल में सर्वेश काम के सिलसिले में राजकोट गया है। गगन रूचि से कहता है कि माँ के नाम पर उसे टी.वी. में कोई काम दिला दे। रूचि गगन को समझाती है कि पहले वह ठीक तरह से पढ़ाई पूरी करे और बताया कि आज के दौर में कोई किसी का पहचान पत्र नहीं बन सकता।

अपनी पहचान बनाने के लिए खुद संघर्ष करना पडता है । उसने गगन को अपने घर की चाबी देकर कहा कि तीन-चार दिन में वह घर आया करेगी ।

चार-पाँच दिन बाद सर्वेश जब राजकोट से लौटा तो वह खुश है । वह एक सांसद की अवैध संतान और पत्नी का पता लगाने राजकोट गया था । जिसमें उसे सफलता मिली है । रूचि उस सांसद की गोपन हकीकत को ओपन करना सही नहीं मानती । उसे अपनी और गगन की बात जो सर्वेश से गोपनीय है वह याद आ गई । बीजी आकर उन दोनों को खाना खाने के लिए बताती है कि आज उनकी कामवाली मंदा छुट्टी पर है । उसने ही खाना पकाया है । सर्वेश रूचि से पूछता है कि इतने दिन वह कहाँ थी ? उसे उसकी ग़ैरहाजिरी में बीजी का खयाल रखना चाहिए था । घर समय पर आ जाना चाहिए था । रूचि अपने काम की व्यस्तता का बहाना बनाकर गगन वाली बात छिपाना चाहती है । जब उसे लगता है कि सर्वेश अपना आपा खो रहा है तो तब अपनी खूबसूरती और मादक मुस्कुराहट के जादू से सर्वेश को उसके 'पंद्रह अगस्त' वाली बात याद दिलाती है ।सर्वेश थोडे अच्छे मूड में था। उसे उसकी पहली पत्नी मनजीत से कितनी बोलाचाली होती थी उसकी याद आ गई । वह रूचि को अपनी छब्बीस जनवरी कहता था । जिस तरह छब्बीस जनवरी को हमारा संविधान क़ायम होकर देश की सुचारू रूप से व्यवस्था आरंभ हुई थी उसी तरह रूचि ने आकर उसके जीवन की रिक्तता और तिक्तता दूर की थी । पुरा एक सप्ताह दोनों ने एकसाथ खुशी से बिताया । रूचि के जीवन में सर्वेश के आने से उसे जीने का एक नया तरीका मिल गया । वह जो व्यंजन खाने में परहेज़ करती थी, वह अच्छे लगने लगे । बीजी उसे एक चम्मच मुहब्बत वाली नायाब रेसिपी की बात बताती है । प्रेम से परोसा रूखासूखा खाना व्यंजन बन सकता है । वीकेन्ड आ गया । सर्वेश के कुछ कपडे रूचि के ओशविरा में पडे रहते । उसे वह कपडे पहनने थे इसलिए वह रूचि को बिना बताए वहाँ पहुँचता है । वह देखता है कि पूरा घर बिखरा पडा था । कॉफी – चाय के प्याले से लेकर जूठी प्लेटों का ढेर लगा था । उसने जब सुरक्षाकर्मी से इस बात पर पूछताछ की तो पता लगा कि

मैडम का बेटा यहाँ रहता है। सर्वेश को जब रूचि का फोन आया तो रूचि को पता लगा कि सर्वेश ओशविरा गया था और गगन वाली बात का रहस्योद्घाटन हो गया है। रूचि जब सर्वेश के घर पहुँची तो उसकी कामवाली मंदा ने उसे एक चिट्ठी पकडाई कि सर्वेश उसकी माँ के सामने कोई ड्रामा करना नहीं चाहता और उसे सी.सी.डी मिलने के लिए बुलाया है। रूचि अपने धडकते दिल के साथ हिम्मत और हिमाकत के साथ अंदर गई। रूचि ने सर्वेश से कहा कि वह उसे सच्चाई बताने से डरती थी। सर्वेश ने क्रोध में आकर कहा कि उसे गगन और उसके पिता से आज भी बोलचाल का नाता है। रूचि ने बोलना आरंभ किया कि अब तक प्रभाकर बेटे गगन को जैसे-तैसे कर संभाल लेता था, परंतु अब उसने गगन को घर से निकाल दिया है। रूचि के सामने दो ही विकल्प थे कि एक तो वह अपनी आँखों के सामने उसे बरबाद होते हुए देखे या फिर उसे संभाल ले।

सर्वेश को इतना गुस्सा आया था कि वह भूल गया कि वह सी.सी.डी. में कईं सारे लोगों के बीच बैठा है। उसने आसपास के लोगों की परवाह किए बिना विवाद करने लगा। जिस प्रकार अब उसका अपने भूतकाल से रिश्ता-नाता नहीं है, उसी प्रकार रूचो को भी गगन से रिश्ता नहीं रखना चाहिए। उसे इस बात का सबसे ज़्यादा गुस्सा था कि उन दोनों के बीच ऐसा कुछ नहीं था तो उसने गगन वाली बात उससे छिपाई क्यों? रूचि मजबूर होकर बताती है कि वह अपने मातृत्व का गला कैसे घोंट सकती है ? तब सर्वेश ने अपना आपा खोकर अपनी पत्नी का गर्दन पकड ली। वह यह भूल गया कि लोग उन्हें देख रहे हैं। पास की तीसरी मैज पर एक महिला पत्रकार ने यह सब देखा और उसे कैमरे में रेकॉर्डिंग कर लिया। रूचि अपमानित होकर जब ओशविरा पहुँची तो सुरक्षाकर्मी ने फरियाद की कि गगन और उसके दोस्तों ने बिल्डींग का वातावरण बिगाड दिया है। उसने घर में जाकर देखा कि घर सिगरेट के धुँए से भरा है। गगन और उसके दोस्त उँची आवाज़ में गाना रखकर नाच रहे हैं। गगन के दोस्त परिस्थिति की नज़ाकत समझकर चले गए। रूचि ने गगन को एक थप्पड मारा। जब उसने नशे के बारे में पूछा

तो गगन एक भी उत्तर देने की हालत में नहीं था। वह वहीं नशेडी की तरह सोफे में सो गया। वह सोचती रही कि किस प्रकार से उसकी पहली शादी जो भूतकाल थी वह उसके वर्तमान को बिगाड रही है। प्रसिद्ध लोगों के लिए गोपनीयता एक असंभव मरीचिका है, उस बात का एहसास उसे दूसरे दिन हुआ। लगभग स्थानीय सभी अखबारों के पन्नों पर शीर्षक लिखा था, " रूचि की रसोई – बेस्वाद" और नीचे सर्वेश नारंग के दोनों हाथ उसकी गर्दन को कसे हुए हैं – उसकी तस्वीर थी। थोडी ही देर में फोन आने शुरू हुए , जिसमें तरह-तरह के प्रश्न पूछे गए। उन दोनों के बीच झगड़ा क्यों हुआ से लेकर पूछे गए प्रश्नों की झडी में व्यंग्यात्मक प्रश्न यह भी था कि क्या यह कोई नए व्यंजन विधि की रिहर्सल चल रही थी ? आदि। सर्वेश से पूछे गए प्रश्नों में मिडिया ने उसे पूछा कि क्या आपने अपनी पत्नी का गला प्रेमवश पकडा है ? सी.सी.डी. जैसे सामाजिक और सार्वजनिक स्थान पर ऐसी घिलौनी हरकत करना ठीक है..... आदि। सर्वेश ने समय का तक़ाझा लेते हुए और अपने पत्रकारिता के अनुभव की कच्ची सामग्री लेकर और अपने गुस्से को नियंत्रित करते हुए बहुत ध्यान से यह बयान दिया कि वे दोनों मज़ाक के मूड में कलह का नाटक कर रहे थे। उसने जब रूचि की गर्दन पर जब हाथ रखा तब रूचि न तो रो रही है और न तो चिल्ला रही है। दृश्य मीडिया पर नारीवादियों ने चिल्ला-चिल्लाकर इसके विरुद्ध आवाज़ उठाने की बात कही।

रूचि अपने ओशिवरा फ्लेट में बेटे के साथ जीने का प्रयत्न कर रही थी। कईं बडी-बडी चैनलों ने उसके कार्यक्रम दिखाना बंद कर दिया। गगन आए दिन नशेडी बनकर कईं से नशे की हालत में घर आता। रूचि अपनी नीजि ज़िंदगी सँवारती या बेटे की। गगन दो-तीन दिन ठीक रहता और फिर से चौथे दिन कोई बिगडा दोस्त उसे ड्रग्स दे देता। इस हालात में रूचि को नया कार्यक्रम 'खुशियों की होम डिलिवरी ' मिला था। उसने वहाँ फोन करके बता दिया कि अभी वह अपनी नीजि समस्याओं से परेशान है। वह यह कार्यक्रम पर ध्यान नहीं दे सकती। परंतु मेहरा ब्रधर्स वालों ने बताया कि आज-कल की दौडधाम वाली ज़िंदगी में हर एक इन्सान की

अपनी नीजि समस्या है। लेकिन इससे दुनिया का काम रूक नहीं सकता । अपने पसंदीदा कार्य में व्यस्त हो जाने से उसका अवसाद दूर हो जाएगा । अखबार और दृश्य मीडिया ने सर्वेश को टार्गेट बनाकर रखा है । रोज़ नई-नई खबरें दिखाते रहते । कुछ खबरें इतनी उद्भवित रहती कि जो रूचि को भी उसके बारे में पता नहीं रहती । रूचि जिसे अपना पंद्रह अगस्त मानती थी वह आज छ: अगस्त बन गया है । छ: अगस्त को जापान में हिरोशिमा और नागासाकी पर बंब गिरने से जो विध्वंस हुआ था उसी तरह रूचि की नीजि ज़िदगी में भी उथल-पुथल मच गई है । वह सोचती है कि गगन और सर्वेश दोनों को छोडकर वर्किंग वीमेन्स होस्टेल में चली जाएगी ।

गगन पीछले चार दिनों से घर नहीं आया था । उसे उसकी चिंता हो रही थी । रूचि गगन का इंतझार कर रही थी । उसे अपने भूत और वर्तमान में उसकी जीवन रूपी नैया डाँवाडोल हो रही है ।

प्रभाकर से अलग होते समय उसके सामने अलग चुनौतियाँ थी । आज उसके पास पति, यश-कीर्ति, धन सब कुछ है । लेकिन परिवार बिछड गया है । इस माहौल से तंग आकर उसने थोडा काम करना सोचा । जब उसने लेपटॉप खोला तो सर्वेश का ई-मेल मिला । सर्वेश ने उसे बताया कि वह दो दिन पहले उसे चरस-गांजे के अड्डे की खबर मिली थी । वह जब अपनी टीम के साथ गया तब बहुत माथाकूट के बाद उसे ओर कुछ तो हाथ नहीं आया पर वहाँ उन्हें सत्रह – अठारह साल का एक लडका नशे की हालत में मिला । देखने में वह कोई अच्छे परिवार का लग रहा है । सर्वेश को अपने बेटे अंश की याद आ गई । सुधार-घर भेजने की जगह वह उसे अपने घर ले आया । उसने सोचा था कि होश आते ही वह अपने घर चला जाएअगा । बीजी को भी इस अनजान लडके में अंश नज़र आता है । वह उसका बहुत खयाल रख रही है । सर्वेश के ऐसे खुलेपन से रूचि को राहत हुई । वह सर्वेश के घर जाने के लिए वर्ली की ओर निकली । घर पहुँच कर जब उसने देखा तो वह अनजान लडका ओर कोई नहीं बल्कि उसका बेटा गगन ही है । गगन माँ को देखकर अपनी गलतियों के लिए माफी माँगने लगा । सर्वेश ने रूचि से पूछा कि उसने

गगन की नशेडी होने की बात क्यों नहीं बताई ? रूचि ने बताया कि ऐसा कोई मौका ही नहीं मिला । वह सर्वेश और बीजी का गगन की जान बचाने के लिए आभार मानते हुए अपने घर जाने के लिए निकली । सर्वेश ने उसे रोक दिया और कहा कि वहाँ चाहर दिवारों मकान में अकेले रहने से तो अच्छा यह है कि वह यहाँ बीजी, गगन और सर्वेश के साथ इस घर में रह सकती है । सर्वेश ने बताया कि कभी-कभी हम सबके बीच मतभेद हो सकते हैं, मनभेद नहीं ।

मुख्य पात्र तथा गौण पात्र :

इस उपन्यास के मुख्य और गौण पात्र हैं -रूचि शर्मा – प्रसिद्ध पाक शास्त्री, प्रभाकर – रूचि का पहला पति, गगन – प्रभाकर और रूचि का बेटा, सर्वेश नारंग –'खुलासा ' समाचार पत्र का एक ख़ोजी पत्रकार, मनजीत – सर्वेश की पहली पत्नी जो टेलिफोन ओपरेटर है ।, अंश – सर्वेश और मनजीत का बेटा, मंदा – सर्वेश के घर में काम करने वाली , बीजी – सर्वेश की माँ, वीरेन्द्र सिंह, कुरबान अली – रूचि के टीवी प्रोग्राम में सहायक, शमशेर सिंह – रूचि के ओशविरा वाले मकान का मालिक, जिज्ञासा 'जिग्स', दामिनी - रूचि की सहेलियाँ

उपसंहार :

ममता जी ने यहाँ एक ऐसे यथार्थ का वर्णन किया है, जो अपनी पीडा, कमज़ोरियों से और विषम परिस्थितियों से आंखें चुराता नहीं है, उन्हें साहस और ईमानदारी से स्वीकारना ही यथार्थता है । लेखिका ने यहाँ समाज में आज जो देखा है, अनुभव किया है –उसी को उपन्यास में चित्रित किया है ।रूचि एक सफल कामकाजी महिला है

ममता जी ने इस उपन्यास में न किसी पात्र का पक्ष लिया है और न ही अपराधी साबित किया है । रूचि और सर्वेश अपने पहले असफल विवाह से बाहर आकर अपनी ख़ुद की पहचान बनाना चाहते हैं । दोनों परिवार में माता-पिता के टकराव और दरार के कारण बच्चें ड्रग्स के गलत रास्ते पर निकल चुके हैं ।ऐसा नहीं है कि जो बच्चे टूटे परिवार से आते है वे ही नशे की गिरफ़्त में आते है ।युवा पीढ़ी नशे की चपेट में आकर अपनी ज़िंदगी तो बरबाद करती है

साथ-साथ परिवार भी इसकी असर से तबाह हो जाते हैं। मीडिया आज हमसे इतनी हद तक जुड गया है कि हमारी व्यक्तिगत बातों को समाज के सामने लाता है।अंत में सही अर्थ में सपने जैसी बात की सच में होम डिलिवरी हो जाती है। सर्वेश- रूचि, बीजी और गगन एक साथ एक परिवार में रहकर अपने सपनों को सार्थक बनाना चाहते हैं।

निबंधात्मक प्रश्न :

१. 'सपनों की होम डिलिवरी ' लघु उपन्यास में चित्रित समकालीन जीवन की यथार्थता

२. 'सपनों की होम डिलिवरी' का सारांश लिखिए।

३. 'सपनों की होम डिलिवरी ' में चित्रित रूचि शर्मा का चरित्र चित्रण कीजिए।

४. 'सपनों की होम डिलिवरी ' में सर्वेश नारंग के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

टिप्पणी के प्रश्न :

१. गगन, २. अंश,   ३. प्रभाकर शर्मा,   ४. रूचि और प्रभाकर का दाम्पत्य जीवन

-प्रस्तुति

भैरवी आर .पंड्या

पूर्णप्रज्ञा कॉलेज, उडुपि

****

2. दीपदन

-डॉ. रामकुमार वर्मा

एकांकीकार का परिचय :

डॉ.रामकुमार वर्मा का जन्म १५ सितंबर, सन् १९०५ को मध्यप्रदेश के सागर ज़िले में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा सागर में तथा उच्चशिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय में हुई । नागपुर विश्वविद्यालय से इन्होंने पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की । वर्माजी प्रयाग विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष भी रहे । सन् १९६३ में भारत सरकार से इन्हें पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया गया ।

छात्रावस्था से ही ये रंगमंच से जुड़े गए थे इसलिए उनके नाट्कों तथा एकांकीयों में अभिनेयता का गुण प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहता है। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। इन्होंने काव्य, नाटक, निबंध, आलोचना जैसी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई । सन १९९० में इनका निधन हो गया । वर्माजी को हिन्दी नाटकों का जनक कहा जाता है। इनके अधिकांश नाटक ऐतिहासिक तथा सामाजिक समस्याओं से जुडे होते हैं। इनकी प्रसिद्धर चनाएँ है- 'पृथ्वीराज की आँखे', 'रेशमी टाई', 'सप्त किरण','कोमुदी महोत्सव','दीपदान','चित्ररेखा','जुही के फुल' और 'जौहर' आदी।

एकांकी का सार:

दीपदान नामक एकांकी रामकुमार वर्मा का एक प्रसिद्ध एकांकी है। 'दीपदान' की कथा भी कुँवर उदयसिहं का संरक्षण करनेवाली धाय पन्ना के द्वारा कुँवर उदयसिंह के प्राणों की रक्षा करने और उसके लिए अपने पुत्र चंदन के बलिदान करने के प्रसंग से संबंधित है।

दीपदान की कथा सन् १५३६ ईसवीं में राजस्थान के चित्तोड़ दुर्ग में घटित होती है । चित्तोड़ के महाराणा साँगा का देहांत हो चुका है और उनके राज्य का उत्तराधिकारी उनका सबसे छोटा पुत्र कुमार उदयसिंह है, जिसकी उम्र अभी चौदह वर्ष है। कुँवर उदयसिंह की देखरेख और लालन-पालन का कार्य पन्ना नाम की एक स्वामिभक्त स्त्री कर रही है । जिसे पन्ना धाय के नाम से जाना जाता है । धाय पन्न्ना का तेरह वर्ष का चंदन नाम का एक पुत्र भी है, जो कुँवर उदयसिंह के साथ खेलता रहता है । महाराणा साँगा की मृत्यु के पश्चात उनके भाई पृथ्वीराज का संबंध एक दासी से था तथा उस संबंध के फलस्वरूप दासी पुत्र बनवीर का जन्म हुआ था, जिसकी आयु ३२ वर्ष है, राज्य पर अपना अधिकार स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील है ।'दीपदान' की सारी कथा पन्ना धाय और बनवीर पर आकर चरमसीमा की स्थिति में ठहर जाती है ।

'दीपदान' की संपूर्ण कथा कुँवर उदयसिंह के कक्ष में घटित होती है । रात्रि का दूसरा प्रहर है । नेपथ्य में नारियों की सम्मिलित नृत्यध्वनि एवं गायन का स्वर सुनाई देता है, जो धीरे-धीरे हल्का हो रहा है । उदयसिंह आकर पन्ना धाय को बतलाता है कि बाहर सुंदर-सुंदर लडकियाँ तुलजा भवानी के सामने नाच रही हैं और दीपदान कर रही हैं ।वह पन्ना को भी अपने साथ नृत्य देखने के लिए ले जाने को ज़िद करता है । किन्तु पन्ना इस बात के लिए तैयार नहीं होती । वह कुँवर उदयसिंह को समझाती है कि तुम तो चितौड़ के सूरज हो और इस राजवंश के दीपक तथा महाराना साँगा के कुलदीपक हो। तुम्हें इस तरह नाच-गाने को देखने के लिए नहीं जाना चाहिए। कुँवर उदयसिंह रूठ जाता है और बिना कुछ खाये-पिये वहाँ से जाकर कहीं और सो जाता है ।

उदय सिंह के जाने के पश्चात पन्ना के पास रावल स्वरूप सिंह की लड़की सोना, जिसकी उम्र सोलह वर्ष है । वह अत्यंत रूपवती तथा कुँवर उदय सिंह की सहेली है। वह पन्ना के पास आ कर कुँवर उदय सिंह को अपने साथ ले जाने के लिए आग्रह करती है किन्तु पन्ना धाय मना कर

देती है। पन्ना को संदेह हो जाता हैं कि बनवीर के मन में कुँवर उदय सिंह को लेकर कोई षड़यंत्र का भाव है और उसी के लिए यह 'दीपदान उत्सव' असमय आयोजित करवाया है, ताकि लोगों का ध्यान उत्सव में लगा रहे। ताकि वह अपने उद्देश्य में सफल हो जाए। पन्ना को इस बात में भी संदेह है कि सोना कहीं न कहीं बनवीर के षड़यंत्र में सम्मिलित है। वह सोना की बात को अस्वीकार कर देती है और सोना नाराज़ होकर पन्ना को भला-बुरा कहते हुए वहाँ से चली जाती है।

पन्ना धाय का अनुमान सही निकला। अंतःपुर की परिचारिका सामली आ कर पन्ना को बतलाती है कि बनवीर ने सोते हुए महाराणा विक्रम की छाती में तलवार भोंक कर हत्या कर दी है। उसे आशंका हैं कि कहीं अब वह यहाँ आ कर कुँवर उदय सिंह को भी इस राज्य का उत्तराधिकारी समझ़कर उसकी भी हत्या न कर दे ? इस विकट समय में आने वाली आपत्ति से थोडा भी विचलित न होते हुए पन्ना धाय ने तत्काल निर्णय लिया। अब राज्य के उत्तराधिकारी और कुलदीपक कुँवर उदयसिंह के प्राणों की रक्षा करने के लिए उसे अपने पुत्र चंदन की बलि देनी होगी। दुर्ग में जूठी पत्तल उठानेवाले कर्मचारी किरत की मदद लेकर पन्ना ने कुँवर उदय सिंह को उसकी टोकरी में रखवाकर जूठी पत्तलों से ढँककर दुर्ग से बाहर बेरिस नदी के किनारे श्मशान तक पहुँचवा दिया। ताकि उसे बाद में सुरक्षित अवस्था में कुंभलगढ़ ले जा सके। इसके पश्चात पन्ना ने कुँवर उदय के शयन कक्ष में अपने पुत्र चंदन को सूलाकर चादर से ढँक दिया।

पन्ना की आशंका के अनुरूप राणा विक्रम की हत्या के पश्चात मदांध बनवीर कुँवर उदय के कक्ष में आता है और पन्ना द्वारा बहुत रोकने के बावजूद भी चंदन को कुँवर उदय सिंह समझकर अपनी तलवार के प्रहार से उसकी हत्या कर देता है। पन्ना ज़ोर से चीखकर मूर्छित हो जाती है। कमरे में मंद लौ से दीपक जलता रहता है और यहीं पर एकांकी समाप्त हो जाता है।

विशेषता :

डॉ. रामकुमार वर्मा द्वारा रचित 'दीपदान' एकांकी में राजपूताने की वीरांगना पन्ना धाय के अभूतपूर्व बलिदान का चित्रण किया है । यह एकांकी ऐतहासिक घटना पर आधारित है । पन्ना धाय ने जिस प्रकार त्याग एवं बलिदान की भावना का परिचय देते हुए अपने पारिवारिक मोह एवं आसक्ति से ऊपर उठकर अपने कलेजे के टुकड़े चंदन को उदय सिंह की रक्षा में होम कर के बलिदान का जो, सर्वोत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत किया है । उसका चित्रण करते हुए एकांकीकार कर्तव्यनिष्ठ, स्वामिभक्त, बुद्धिमती तथा कर्तव्यपरायणता का संदेश दे रहे हैं । यह स्पष्ट कर रहे हैं कि राष्ट्रप्रेम पुत्रप्रेम से भी कईं अधिक एवं महान होता है ।

'दीपदान' एकांकी का शिर्षक सोद्देश्य एवं सार्थक है ।एकांकी का समस्त कथानक दीपदान शिर्षक की चारों ओर घूमता है । एकांकी में घटित समस्त घटनाओं का संबंध चित्तौड में होने वाले दीपदान से अवश्य है । बनवीर ने मयुर पक्ष नामक कुंड में तुलजा भवानी की पूजा के लिए दीपदान का आयोजन किया ।बनवीर ने पन्ना धाय के पुत्र चंदन को उदय सिंह समझकर यमराज को उसका दीपदान किया ।पन्ना कुँवर उदय सिंह की रक्षा के लिए अपने कुल के दीपक चंदन का दान कर देती है । इस प्रकार शीर्षक अत्यंत सार्थक एवं सटीक है ।

एक अंक के प्रश्न :

1. 'दीपदान' एकांकी के लेखक कौन है ? – डॉ. रामकुमार वर्मा
2. कुँवर उदय सिंह कौन है ? – राणा साँगा के पुत्र
3. बनवीर किसका पुत्र है ? - दासीपुत्र
4. रावल स्वरूप सिंह की पुत्री कौन है ? - सोना
5. चंदन की माता का नाम क्या है ? - पन्ना धाय

सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

1. "धाय माँ, देखो न कितनी सुंदर-सुंदर लडकियाँ नाच रही हैं । गीत गीत गाती हुई तुलजा भवानी के सामने नाच रही है । चलो न! देखो न ! "
2. "दिन में तो तुम चित्तौड के सूरज हो, कुँवर ! और रात में तुम राजवंश के दीपक है, महाराणा सांगा के कुलदीपक हो।"

3. “अन्नदाता! प्यार कहने में जबान पर कैसे आए? वो तो दिल की बात है।मौके पे ही देखा जाता है। और कहने को तो मैं कही चुका हूँ कि उनके लिए अपनी जान तक हाज़िर कर सकता हौं ।”

निबंधात्मक प्रश्न :

1. “दीपदान” एकांकी का सारांश अपने शब्दो में लिखिए ?
2. “दीपदान” एकांकी का सार विशेषताओं के साथ स्पष्ट कीजिए ?
3. पन्ना धाय का चरित्र- चित्रण पर प्रकाश डालते हुए, ‘दीपदान’ शीर्षक की सार्थकता को स्पष्ट कीजिए ।

प्रस्तुति:

आनंद रायमाने

हिन्दी विभागाध्यक्ष, पूर्णप्रज्ञा कॉलेज,उडुपि

****

3. रीढ़ की हड्डी

-जगदीशचंद्र माथुर

एकांकीकार का परिचय :

रीढ़ की हड्डी जगदीशचंद्र माथुर द्वारा एक ऐसा एकांकी है जिससे लड़की का विवाह एक सामाजिक समस्या के रूप में दर्शाया गया है । यह एकांकी एकांकीकार के 'भोर का तारा' नामक एकांकी संकलन से लिया गया है । इसमें एकांकीकार ने माता-पिता की दुविधा और लड़केवालों के लालच का बड़ा सुंदर और वास्तविक चित्रण किया है, तो साथ ही अगर लड़कियाँ पढ़-लिख जाएँ तो अपने को कैसे लालचियों से बचा सकती हैं उसका भी अद्‌भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है । 'समाज में लड़की का विवाह एक समस्या ही है'- इस कथन को स्पष्ट करता हुआ यह एकांकी बहुत सी बतों को हमें समझाती है ।

इस एकांकी में कुल छः पात्र हैं – रामस्वरूप, उनका नौकर रतन, रामस्वरूप की पत्नी प्रेमा, उनकी बेटी उमा, उमा को देखने आनेवाला लड़का शंकर और उसके पिता गोपाल प्रसाद । पूरा एकांकी एक मामूली से सजे कमरें में खेला गया है ।

उमा को देखने के लिए गोपाल प्रसाद और उनका बेटा शंकर आनेवाले हैं । रामस्वरूप और उनका नौकर कमरे को सजाने में लगे हैं । पलंग (लकड़ी का) उस पर साफ चादर बिछाकर हारमोनियम रखा गया है । नाश्ता तैयार किया गया है । पिता चाहते हैं कि लड़की बन सँवरकर, पाउडर लिपिस्टिक लगाकर लड़के के सामने आए । पर माँ कहती हैं कि मैंने उसे बहुत समझाया लेकिन वह बनने-सँवरने को तो दूर पाउड़र लगाने को भी तैयार नहीं हो रही । मना किया था ज्यादा पढ़ाओं नहीं अब भुगतो । इस बात पर पति-पत्नी में बहस होती है । अंत में रामस्वरूप कहते हैं कि पता नहीं इस लड़की के दिमाग को क्या हो गया है । फिर वे पत्नी से कहते हैं तुम उनके सामने ज्यादा बोलना नहीं, बोलने लगती है तो सोचती नहीं । अगर बोलते-

गोलते उसकी पढ़ाई की खबर उनको लग गई तो मुश्किल हो जाएगी। उन्हें तो कम पढ़ी-लिखी और सुंदर लड़की चाहिए।

नाश्ता तैयार रखा होता है।पत्नी टोस्ट के लिए मक्खन मंगवाना भूल जाती है।

रामस्वरूप नौकर रतन को भेजते हैं। बाहर जाते हुए नौकर देखता है कि घर की ओर कोई आ रहा है। वह मालिक को बताता है। तभी दरवाजे पर दस्तक होती है। दरवाज़ा खुलने पर गोपाल प्रसाद और उसका बेटा शंकर अंदर आते हैं। यहाँ यह बताना अनिवार्य है कि लड़का बहुत बिगड़ा हुआ है और उसकी पीठ झुकी रहती है। तो मेहमान का स्वागत रामस्वरूप करते हैं। फिर दोनों आपस में बाते करते हुए पुराने ज़मानेकी यादों में खो जाते हैं। तभी अचानक अपनी आवाज़ और बात करने के तरीके को बदलकर गोपाल प्रसाद कहते हैं अब कुछ बिजनेस की बात हो जाए। रामस्वरूप खुद अंदर काते जाते हैं और नाश्ता लगवाकर खुद ही लेकर आते हैं। इस बीच गोपालप्रसाद अपने बेटे से कहते हैं –आदमी तो भला है। मकान देखकर हैसियत भी ठीक लग रही है, पर पता तो चले लड़की कैसी है। इतना कहकर अपने बेटे को डाँट लगाते हैं और तनकर बैठने को कहते हैं। रामस्वरूप आकर दोनों को नाश्ता कराते हैं और इधर-उधर की बातें करते हैं। गोपाल प्रसाद पूछते हैं कि लड़की सुंदर तो है ? इस पर रामस्वरूप खुद ही देखने की बात करते हैं।

जन्मपत्री के बारे में रामस्वरूप कहते हैं –"भगवान के चरणों में रख दी है, मिली हुई समझिए।" बातों-बातों में गोपालप्रसाद पूछते हैं –ज्यादा पढ़ी लिखी तो नहीं है ? सिलाई-कढ़ाई आती है ? गाना-बजाना जानती बगैरह-बगैरह। पिता सभी का प्रमाण देते हैं।

तब लड़की को बुलाया जाता है। वह पान की तश्तरी लेकर आती है। उसे गीत सुनाने को कहा जाता है। वह सितार बजाते हुए गाने लगती है जैसे ही उसकी नज़र लड़के पर पड़ती है वह गाना बंद कर देती है। लड़की को चश्मा लगाया देख बाप-बेटे एक साथ पूछ बैठते हैं। तब पिता कहते हैं कि कुछ दिन से आँख में दर्द है इसलिए चश्मा पहना है तो दोनो संतुष्ट हो जाते हैं

। अब गोपाल प्रसाद को लड़की की चाल और चेहरा भी देखना था। फिर लड़की से कुछ बोलने को कहते हैं। तब ज़रा तेज़ आवाज़ में उमा कहती है क्या बोलूं बाबूजी ! जब कुर्सी मेज बेची जाती है तो दुकानदार ही बोलता है। कुर्सी मेज़ तो बोलते नहीं। दुकानदार दिखा देता है। खरीददार को पसंद आए तो अच्छा .... वरना।

रामस्वरूप क्रोधित होकर बेटी को चुप होने को कहते हैं। उमा कहती है – "अब मुझे कहने दीजिए बाबूजी ....।

ये महाशय मुझे खरीदने आए हैं, ज़रा इनसे पूछिए तो क्या लड़कियों के दिल नहीं होता है ? क्या उनको चोट नहीं लगती ? लड़कियाँ मजबूर भेड़-बकरियाँ हैं क्या, जिन्हें कसाई अच्छी तरह देखभाल कर खरीदते हैं ?

गोपाल प्रसाद- "हमारी बेइज्जती हो रही है।"

उमा – "तो क्या अप इतनी देर से हमारी बेइज्जती नहीं कर रहे थे ?"

आप ज़रा अपने साहबजादे से पूछिये कि पिछली फरवरी में ये लड़कियों के होस्टल के ईर्द-गिर्द क्यों मंडरा रहे थे ? और वहाँ से क्यों भगाए गए थे ?

शंकर- "बाबूजी चलिए यहाँ से।

गोपाल प्रसाद – "क्या तुम होस्टल जानती हो ? क्या कालेज में पढ़ी हो ?"

उमा – "हाँ पढ़ी-लिखी हूँ। आपके बेटे की तरह ताक-झाँक करती पकड़ी नहीं गयी। नौकरानी के पैर पकड़कर मुँह छिपाकर भागी तो नहीं। "

गोपाल प्रसाद और शंकर दोनों खड़े हो जाते हैं और रामस्वरूप से कहते हैं आपकी लड़की बी.ए. पास है और आपने हमसे झूठ कहा कि दसवी तक पढ़ी है। यह कहते हुए दरवाज़े की ओर बढ़ जाते हैं। गोपाल प्रसाद बेबस और गुस्सा हैं और शंकर रुआंसा। दोनों चले जाते हैं।

प्रेमा पती कहती है , उमा रो रही है। रामस्वरूप खड़े हो जाते हैं, तभी रतन मक्खन लेकर आता है। इसके साथ ही एकांकी का समापन होता है।

इस एकांकी में एकांकीकार ने यह स्पष्ट किया है कि भले ही लड़का बदचलन हो, बदसूरत हो लेकिन लड़की सर्वगुण संपन्न चाहिए। और साथ ही दान, दक्षिणा दहेज बगैरह भी। लड़की ज्यादा पढ़ी लिखी होगी तो तकरार करेगी, अनपढ़ हुई तो नौकरानी की तरह काम कर एक कोने में पडी रहेगी।

लड़कियों के होस्टल में घुसना, अपमानित कर भगाया जाना ये सब शर्म की बाते हैं। एक लड़की अपने पति में इन दुर्गुणों की कल्पना भी नहीं कर सकती। उमा ने शंकर के इसी तथ्य को उजाकर किया है और उसे रीढ़ की हड्डी विहीन बताया है। इसी से इस एकांकी का नाम 'रीढ़ की हड्डी' सार्थक होता है।

संदर्भ सहित व्याख्या के प्रश्न :

1. "आजकल तो लड़की कितनी ही सुंदर हो, बिना टीम-टाम के भला कौन पूछता है।"
2. "तुम्हें कतई अपने ज़ुबार पर काबू नहीं है।"
3. "बाप सेर है तो लड़का सवा सेर। बी.एस.सी के बाद लखनऊ में ही पढ़ता है।"
4. "मैंने आपसे पहले ही कहा था, लड़की का खूबसूरत होना जरूरी है।"

-प्रस्तुति
श्रीमति. चंद्रिका राव
हिन्दी प्रवक्ता,
कार्मेल कालेज, मोडंकापु, बंटवाल

****

4. बहू की विदा

-विनोद रस्तोगी

एकांकीकार का परिचय :

विनोद रस्तोगी हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध नाटककार एवं एकांकीकार हैं। सन १९५८ ई में उन्होंने ’नये हाथ’ नाटक लिखा। उसके बाद उनका ’बर्फ की मीनार’ नाटक महत्वपूर्ण है, जिसकी अनेक प्रस्तुतियों के विवरण उपलब्ध है। उनके अन्य प्रमुख नाटक हैं –’आजादी के बाद’, ’ज़िंदगी के गीत’, ’भगीरथ के बेटे’, ’नई लहर ’। उनके प्रमुख एकांकियों के संग्रह ’पुरुष का पाप’, ’कसम कुरान की’, ’काले कौए गोरे हँस’, ’स्वर्ग के खडहर’, और ’देश के दुश्मन’ आदि प्रकाशित हैं।

प्रस्तुत एकांकी ’बहू की विदा’ श्री वोनोद रस्तोगी द्वारा लिखित है। इस एकांकी के माध्यम से एकांकीकार ने हमारे समाज में व्याप्त दहेज की समस्या को दर्शाया है।

इस एकांकी में कुल पाँच पात्र हैं – जीवन लाल, उनकी पत्नी राजेश्वरी, उनका बेटा रमेश, बहूँ कमला और प्रमोद जो कमला का भाई है। प्रमोद की बहन कमला का विवाह जीवनलाल के पुत्र रमेश के साथ होता है। प्रमोद अपनी पारिवारिक हैसियत के हिसाब से दहेज देता है। जीवनलाल आशा के अनुरूप दहेज न मिलने से चिढ़ा हुआ रहता है।

विवाह के बाद पहला सावन आने पर बहूँ को उसके मायके भेजे जाने की एक रस्म होती है उसी रस्म को पूरी करने के लिए प्रमोद अपनी बहन कमला को विदा करने उसके ससुराल पहुँचता है परंतु कमला के ससुर जीवनलाल अपनी बहू की विदा नहीं करना चाहते। जीवनलाल के अनुसार बेटे की शादी में बहू कमला के परिवारवालों ने उनकी हैसियत के हिसाब से उनकी खातिरदारी नहीं की तथा कम दहेज दिया। इससे उनके मान पर धब्बा लगता है। जीवनलाल प्रमोद पर व्यंग्य करते हुए यह भी कहता है कि जब उअनकी मुँह मांगा दहेज़ देने का

सामर्थ्य नहीं था तो अपनी बहन की शादी उनके बेटे से क्यों करवाई । अब जब तक दहेज की पूरी रकम अर्थात पाँच हजार नहीं चुका दी जाती है वह कमला को अपने मायके विदा नहीं करेगा । प्रमोद जीवनलाल से अपनी बहन को मायके भेजने की प्रार्थना करता है और केवल लड़कीवाला होने के कारण उस पर होनेवाले अन्याय का विरोध करता है । इस पर जीवनलाल उसे अपनी बेटी गौरी के विवाह का उदाहरण देते हुए कहता है कि वे भी लड़कीवाले है परंतु उसने अपनी बेटी का विवाह बड़े धूमधाम से किया । उसने अपनी बेटी गौरी के ससुरालवालों की इतनी खातिरदारी की कि साथी दंग रह गये थे । इसलिए लड़कीवाले होते हुए भी उनकी मूँछ ऊँची ही है । इस समय उनका बेटा रमेश उसी बेटी गौरी को विदा करवाने उसके ससुराल गया है और किसी भी समय रमेश अपनी बहन गौरी को लेकर यहाँ पहुँचता ही होगा ।

प्रमोद उसके बाद अपनी बहन कमला से मिलता है और उसे सांत्वना देते हुए कहता है कि वह वापस जाकर अपना घर बेच देगा और दहेज की रकम का जुगाड़ कर लेगा । इस पर कमला अपने भाई को समझाती है कि घर बेचने की बात वह बिलकुल न करें क्योंकि अभी उसकी छोटी बहन विमला के विवाह की जिम्मेदारी उसके सिर पर है और क्या हुआ यदि वह पहला सावन अपने मायके में न बिता पाए । यहाँ ससुराल में उसकी सास और ननद गौरी बहुत अच्छी है । गौरी के आने से तो उसे अपनी सखियों को कमी भी नहीं खलेगी

उसी समय कमरे-कमरे में कमला की सांस राजेश्वरी का प्रवेश होता है । राजेश्वरी को अपने पति की स्वार्थी प्रवृत्ति का पता होता है । राजेश्वरी को पता होता है जब तक प्रमोद उन्हें बह पाँच हजार रुपए लाकर नहीं देगा तब तक कमला की विदा नहीं होगी । इसलिए वह स्वयं कमला को तिजोरी की चाभी देकर पाँच हजार लेने को कहती है । वह प्रमोद से कहती है कि ये रुपए वह जीवनलाल को देकर कमला को विदा करा ले जाए । प्रमोद पैसे लेने से इनकार कर देता है ।

उसी समय रमेश बिना अपनी बहन गौरी को विदा किए घर पहँचता है। गौरी के ससुरालवालों ने भी कम दहेज़ का बहाना बनाकर गौरी को विदा करने से मना कर दिया था। जीवनलाल को अपनी बेटी के ससुरालवालों का रवैया अन्यायपूर्ण लगता है। उसे अपनी बेटी के ससुरालवाले लोभी लालची नज़र आने लगते हैं। क्योंकि उसके अनुसार उसने तो अपने जीवन भर की कमाई अपनी बेटी गौरी के ससुरालवालों को दे दी थी। दहेज़ देने के बावजूद उसकी बेटी गौरी के ससुरालवालों के उसे दहेज़ कम पड़ने की वजह से उसके भाई के साथ विदा न करके जीवनलाल को अपना अपमान लगता है और ये शराफत और इनसानियत की दुहाई देते हैं।

तब राजेश्वरी ने अपने पति जीवनलाल की आँखें खोलने के लिए कहती है कि अब वे शराफत और इनसानियत की दुहाई दे रहे हैं। जबकि खुद अपनी बहूँ को दहेज के पाँच हजार कम पड़ने की वजह से उसके भाई को अपमानित कर विदा नहीं कर रहे थे। जीवन्लाल को अपनी गलती का अहसास होता है। वह अपनी पत्नी राजेश्वरी को कहते हैं कि अंदर जाकर बहूँ की विदा की तैयारी करो। जीवनलाल के इस बद्‌ले व्यवहार से सभी प्रसन्न हो जाते हैं। इस तरह जीवनलाल के बदले हुए व्यवहार से कुछ देर पहले का तनावपूर्ण माहौल खुशी में बदल जाता है।

संदर्भ सहित व्याख्या के प्रश्न

1. ठीक कह रहा हूँ। मेरा फैसला अखरी है। विदा तभी होगी जब पाँच हजार नकद इस हाथ पर रख दोगे।
2. धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा भैया। माँजी ममता की मूर्ति है ही, बाबूजी ज़रा जिद्दी स्वभाव के हैं। समय के साथ वे भी सब भूल जाएँगे।
3. घबराओ मत ! मैं जलदी ही फिर आऊँगा और इस बार विदा विदा अवश्य होगी, क्योंकि मैं चोट का मरहम लेकर आऊँगा।
4. गालियों के अलावा कभी सीधी बात नहीं निकलती मुँह से ? जब देखों तब बेढ़ंगी बातें।

निबंधात्मक प्रश्न :

1. 'बहूँ की विदा' एकांकी का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. जीवनलाल का मन परिवर्तन कैसे होता है ? पठित एकांकी के आधार पर विवरण दीजिए।
3. पठित एकांकी 'बहूँ की विदा' के आधार पर जीवनलाल का चरित्र चित्रण कीजिए।

टिप्पणी के प्रश्न :

1. जीवनलाल 2. प्रमोद। 3. कमला। 4. राजेश्वरी।

-श्रीमति. सुमना
हिन्दी प्रवक्ता
श्री रामकृष्ण महाविद्यालय, मंगलूरु

****

5. सबसे बड़ा आदमी

– भगवतीचरण वर्मा

भगवती चरण वर्मा जी का जन्म ३० अगस्त सन् १९०३ में भाद्र शुक्ल अष्टमी के दिन रविवार को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में स्थित शफीपुर नामक ग्राम में हुआ था । इनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा कानपूर के म्युनिसिपल स्कूल में हुई तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी.ए तथा एल.एल.बी की उपाधि प्राप्त की । हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में वर्मा जी का प्रवेश एक कवि के रूप में हुआ था परंतु अपने रोचक एवं उत्कØष्ट लेखन द्वारा स्वयं को श्रेष्ठतम कथाकार ही नहीं वरन् एक एकांकीकार के रूप में भी प्रतिष्ठित किया।‘सबसे बड़ा आदमी’ , ‘चौपाल में’ , ‘दो कलाकार’ , ‘त्रिपथगा’ आदि इनके प्रसिद्ध एकांकी संग्रह हैं । वर्मा जी ने अपने सभी नाटकों एवं एकांकियों में मनुष्य को कल्पना के कोमल धरातल के स्थान पर समाज में पनपने वाले भ्रष्टाचार , कुरीतियों एवं शोषक वर्ग के प्रति विद्रोह का चित्रण किया है । इनकी भाषा ओज प्रधान है।प्रवाह इनकी भाषा का विशेष गुण है। जीवन के सत्य को उद्घाटित करने में वर्मा जी की एकांकी प्रभावोत्पादक उत्प्रेरक का कार्य करते हैं । भगवती चरण वर्मा जी को साहित्य सेवा के लिए भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से भी अलंकØत किया गया है ।

प्रस्तुत एकांकी ‘सबसे बड़ा आदमी’व्यंग्यात्मक शैली में लिखा गया है। एकांकीकार श्री भगवती चरण वर्मा जी ने इस एकांकी में जीवन के सत्य को एक नये रूप में उद्घाटित करने का प्रयास किया है। यहाँ हास-परिहास तथा तर्क के सहारे समाज के विगलित मूल्यों को बदलने का सीधा प्रयास उभर कर सामने आता है। इस एकांकी में गजाती , चिरौंजी , राधे , शंकर , शर्मा जी ,

अहमद , मि. वर्मा और रामेश्वर प्रसाद कुल आठ पात्र हैं । जिनकी विचारधारा एक-दूसरे से पूर्णतः भिन्न है । यहाँ इन आठ पात्रों के द्वारा समाज के हर वर्ग के विचारधारा को सामने रखा गया है। यही भिन्न विचारधारा श्रेष्ठता के प्रश्न को जन्म देता है । श्रेष्ठता का यही प्रश्न अंत तक पाठक को मथता भी रहता है ।

दØश्य की शुरुआत गजाती के रेस्टोराँ से होती है। जहाँ गजाती साहेब आराम कुर्सी पर लेटे हुए अखबार पढ़ रहे होते हैं । तभी चिरौंजी का प्रवेश होता है जो गजाती के रेस्टोराँ का बैरा है । वह अपने मालिक से चाय लेकर जाने की अनुमति माँगता है । अनुमति मिलते ही चिरौंजी चाय लेकर दरवाजे तक पहुँचता ही है कि गजाती उसे बुलाता है और पूछता है कि चिरौंजी उसके आदेश के विरुद्ध जाकर रोटी की सिर्फ आठ स्लाइसें ही क्यों निकाली है , जबकि उसे सोलह निकालने की बात कही गयी थी । क्रोधित होकर गजाती कहता है कि वह इसके लिए उसके तनख्वाह से आठ आने काट लेगा । तभी चिरौंजी अपने द्वारा किये गये गलती को न दुहराने का आश्वासन देता है और कहता है कि वह अगली बार से सोलह नहीं बल्कि बत्तीस स्लाइस निकालेगा ।

इसी समय राधे और शंकर आपस में बहस करते हुए गजाती के रेस्टोराँ में आकर बैठते हैं । राधे और शंकर के बहस का मुद्दा है कि शेली और नेपोलियन में श्रेष्ठकौन है ? राधे के अनुसार अंग्रेजी स्वच्छंदतावाद के प्रख्यात कवि पर्सी बयसी शेली श्रेष्ठ हैं । वहीं दूसरी तरफ शंकर के अनुसार जगत-प्रसिद्ध फ्रांसीसी विजेता नेपोलियन बोनापार्ट श्रेष्ठ हैं । राधे और शंकर किसी भी तरह से एक-दूसरे की बातों से सहमत नहीं होते । इन दोनों के बहस को सुनकर गजाती जी भी पास आकर खड़े हो जाते हैं फिर शंकर चाय मंगवाता है । गजाती जी रुचि लेते हुए बहस का विषय पूछते हैं तो राधे कहता है कि शंकर नेपोलियन जैसे शैतान की तारीफ कर रहा हैं और

शेली जैसे फरिश्ते की निंदा । जिसपर क्रोधित होकर शंकर शेली को बौना ही नहीं बल्कि जनाना भी कह देता है । गजाती जी को यह परिस्थिति टेढ़ा लगने लगता है । राधे गजाती से पूछता हैं कि उन्होंने Bन्द्रे-मोसाब की 'एरियल' पढ़ी है ? वहीं शंकर भी गजाती जी से पूछ बैठता है कि उन्होंने एवट की 'लाइफ Bफ नेपोलियन' पढ़ी है ?गजाती भी अपनी बुद्धि के अनुसार दोनों को लगभग एक जैसा ही जवाब देता है । राधे से कहता है कि 'एरियल' एक महान ग्रंथ है और शेली एक महान व्यक्ति । ठीक यही जवाब शंकर को भी देता है कि 'लाइफ Bफ नेपोलियन' एक महान ग्रंथ है और नेपोलियन एक महान व्यक्ति ।

शर्मा जी प्रवेश करते ही गजाती से चाय लाने को कहते हैं । इस तरफ राधे और शंकर का बहस चलता ही रहता है। जिसपर गजाती शंकर से साधारण बातचीत पर ज्यादा गुस्सा न करने की बात कहते हैं । इसी के साथ शर्मा जी राधे और शंकर से बहुत ही शिष्टता के साथ विवाद का विषय पूछते हैं। शंकर जवाब देता है कि यह उनका निजी मामला है । इसमें शर्मा जी को दखलंदाजी करने की कोई जरुरत नहीं है। शंकर के इस प्रकार के प्रतिउत्तर से शर्मा जी क्रोधित होते हुए कहते हैं कि आजकल के नवयुवक अशिष्ट है और साथ ही उनका पतन भी हो गया है । अवसर का फायदा उठाते हुए राधे शंकर को चिढ़ाने के लिए शर्मा जी से माफी तो मांगता हैं लेकिन शंकर के लिए अशिष्ट शब्द का प्रयोग करता है। शंकर राधे को माफी माँगने के लिए कहता है । तभी राधे शंकर से कहता है कि पहले शर्मा जी माफी मांगे । यह स्थिति देखकर शर्मा जी अकड़कर कहते हैं कि उन्होंने कभी भी किसी से भी क्षमा-प्रार्थना नहीं की । वे एक सत्याग्रही होने के साथ-साथ देश के सेवक हैं । उन्होंने सरकार से माफी माँगने के बजाए जेल जाना उचित समझा । सत्याग्रह करने के समय पुलिस से पीटे , शराब की रोकथाम करने के कारण शराबियों

से पीटे , कर-बंदी आंदोलन के समय जमींदारों से पीटे । यहाँ तक कि अब भूखों मर रहे हैं लेकिन अपने पिता के पास वापस नहीं लौट जाते ।

मि. वर्मा जो पेशे से वकील हैं , वहाँ बैठे सारी परिस्थिति को देख-समझ रहे थे । अचानक शंकर से शर्मा जी के ऊपर मानहानी का मुकदमा दायर करने का सुझाव देते हैं । जिससे शर्मा जी चिढ़कर मि. वर्मा से पूछते हैं कि क्या वहमानहानी की परिभाषा भी जानते हैं ?जैसे ही राधे को पता चलता हैं कि मि. वर्मा वकील हैं तो वह उनसे भी प्रश्न पूछ बैठता है कि शेली और नेपोलियन में श्रेष्ठ कौन है ?जिसमें शर्मा जी बीच में आकर जवाब देते हैं कि शेली और नेपोलियन दोनों पतित थे । श्रेष्ठ तो केवल महात्मा गाँधी ही हैं । मि. वर्मा भी शर्मा जी का समर्थन करते हैं और महात्मा गाँधी को शेली और नेपोलियन से श्रेष्ठ मानते हैं कारण इनदोनों में से किसी ने भी जीवन वकील की हैसियत से शुरु नहीं किया था । मि. वर्मा के हिसाब से श्रेष्ठ तो केवल वकालत हैं ।

तभी कामरेड अहमद अंदर आता है और मि.वर्मा एवं शर्मा जी दोनों का मजाक उड़ाता हैं । मि. वर्मा से कहता है कि वकील कभी भी शरीफ नहीं हो सकता । साथ-ही-साथ शर्मा जी से कहता हैं कि महात्मा गाँधी ‘अहिंसा’ का नाम लेकर स्वयं भी तथा दूसरों को भी गलत रास्ते पर लेकर जा रहे हैं । अहमद के अनुसार इस जगत में अगर कोई श्रेष्ठ हैं , तो वह सिर्फ और सिर्फ रूस से महान क्रांतिकारी नेता लेनिन ही हैं । जिसका राधे और शर्मा जी विरोध करते हैं ।

इसी बीच नाटे कद के दुबले से आदमी रामेश्वर प्रसाद का प्रवेश होता है । प्रवेश करते ही वह अहमद के विचारों का समर्थन करता है और कहता हैं कि लेनिन का विकास में प्रमुख हाथ हैं

। जिससे शर्मा जी क्रोधित होकर कहते हैं कि महात्मा गाँधी को क्यों नहीं पहचान रहे ? दूसरी बार वह शर्मा जी का समर्थन करता है और कहता है कि महात्मा गाँधी देवता है। शंकर नेपोलियन की श्रेष्ठता के बारे में पूछता है तब तीसरी बार वह शंकर का भी समर्थन करता है और कहता हैं कि नेपोलियन हीरो था । फिर राधे शेली की श्रेष्ठता के बारे में पूछता हैं तो तब चौथी बार वह फिर से राधे का भी समर्थन करता है और कहता है कि शेली फरिश्ता था । रामेश्वर ने लेनिन , महात्मा गाँधी , नेपोलियन , शेली की श्रेष्ठता के समर्थन में कही गयी सारी बातों को एक बार में ही धराशायी कर दिया , जब वह कहता हैं कि ये सभी लोग दानव हैं । आज के मानव समाज में अगर आप सम्मान पाना चाहते हैं तो आपको दानव बनना पड़ेगा ।

उसके इस व्यवहार से अहमद को लगता है कि वह शायर हैं लेकिन वह बताता है कि वह कलाकार है और लिखने के लिए मसाला ढूंढ रहा है । शंकर उसके पेशा के बारे में पूछता है तो वह जवाब मजेदार ढंग से देते हुए कहता है कि सब कुछ करता है और कुछ भी नहीं करता है । वह घूमता है , मौज करता है , यही उसकी जिंदगी है । उसके इन जवाबों को सुनकर राधे उसे अजीब तरह का आदमी कह देता है । रामेश्वर मान लेता है कि वह अजीब तरह का आदमी है । उसका मानना है कि श्रेष्ठ वह है जो दुनिया को देने के बजाय उससे कुछ वसूल कर सके । रुपया-पैसा , दीन-ईमान सब कुछ आप से छीन सके । जो मर गया वह कुछ नहीं वसूल कर सकता । वह अपनी इन बातों से सभी को मंत्रमुग्ध कर देता है । जाने से पहले वह सभी से कहकर भी जाता हैं कि सबसे बड़ा आदमी अर्थात् श्रेष्ठ रामेश्वर प्रसाद स्वयं ही है । उसके वहाँ से चले जाने के बाद वह किसी को पागल , किसी को बहरुपिया , किसी को मगरूर लौंड़ा तो किसी को दया का पात्र लगता है । कोई भी रामेश्वर के कहे अनुसार उसे सबसे बड़ा आदमी नहीं मानते ।कुछ समयोपरांत सभी को धीरे-धीरे यह आभास होता है कि किसी का पर्स , किसी की जेब , किसी

का झोला और यहाँ तक की गजाती का कैश-बाक्स ही गायब हो चुका था ।अंत में गजाती कहता है कि सबसे बड़ा आदमी अर्थात् श्रेष्ठ रामेश्वर प्रसाद ही है ।

प्रस्तुत एकांकी में एकांकीकार श्री भगवती चरण वर्मा जी ने श्रेष्ठता के प्रश्न को बहुत रोचक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है । शीर्षक 'सबसे बड़ा आदमी' उपयुक्त सा प्रतित होता है । समाज अपनी विचारधारा के अनुरूप ही श्रेष्ठता का चयन करने के पीछे भाग रहा है , जहाँ गुणवत्ता पीछे छूट रही हैं । राधे के विचार से सबसे बड़ा आदमी शेली हैं ।शंकर के विचार से सबसे बड़ा आदमी नेपोलियन हैं । कांग्रेसशाही शर्मा जी के विचार से तो सबसे बड़ा आदमी महात्मा गाँधी के अलावा और कोई हो ही नहीं सकते हैं । मि. वर्मा के लिए उनका कर्म यानी वकालत ही सबसे बड़ा हैं । कामरेड अहमद के विचार से सबसे बड़ा आदमी तो सिर्फ लेनिन ही है । समाज में खेल सिर्फ अपनी विचारधारा को स्थापित करने का हैं , जहाँ समाज के यर्थाथ के ऊपर पर्दा पड़ जाता है । यहीं से पनपते हैं रामेश्वर प्रसाद जैसे अवसरवादी लोग जो तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग की ओर करारा व्यंग्य कसते हैं ।

एक अंक के प्रश्न :-

1. 'सबसे बड़ा आदमी' एकांकी के एकांकीकार का नाम लिखिए । - भगवती चरण वर्मा
2. 'सबसे बड़ा आदमी' एकांकी किस शैली में लिखा गया है ? – व्यंग्यात्मक शैली
3. 'सबसे बड़ा आदमी' एकांकी में कुल कितने पात्र है ? - आठ
4. चिरौंजी कौन है ? – गजाती के रेस्टोराँ का बैरा है ।
5. चिरौंजी एक रोटी में कितनी स्लाइसें निकालता हैं ? - आठ
6. गजाती के अनुसार सबसे बड़ा आदमी कौन है ? – रामेश्वर प्रसाद

सप्रसंग व्याख्या के प्रश्न :

1. कल्पना के लोक में जो आदमी बिचरता है, वह कायर है ।
2. योद्धा का उपासक यदि कुछ क्षणों के लिए स्वयं योद्धा बन जाय तो कोई ताज्जुब की बात नहीं ।
3. शेली , नेपोलियन , लेनिन , गाँधी – ये सब नाम है – नाम । इन सबों से बड़ा- कहीं बड़ा मैं हूँ , अभी आप लोगों पर यह साबित हो जाएगा ।

निबंधात्मक प्रश्न :-

1. 'सबसे बड़ा आदमी' एकांकी की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए ।
2. शीर्षक की दृष्टि से 'सबसे बड़ा आदमी' एकांकी की समीक्षा करते हुए इसके कथ्य को स्पष्ट कीजिए ।
3. 'सबसे बड़ा आदमी' एकांकी में श्रेष्ठता का प्रश्न अंत तक पाठक को मथता रहता है । इसके प्रतिपादन में लेखक को कहाँ तक सफलता प्राप्त हुई है ?

टिप्पणी के प्रश्न :

1. गजाती 2. रामेश्वर 3. शर्मा जी 4. अहमद

-प्रस्तुति

पुरोबी ए. भंडारी

उपेंद्र पै मेमोरियल कॉलेज, उडुपि

****